अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड4, अंक1, जनवरी - मार्च 2026

इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता में पर्यावरण विमर्श (1990-2020)

शेख सिराज बशा

हिंदी विभाग, आचार्य नागार्जुन विश्वविद्यालय, गुंटूर, आंध्र प्रदेश - 522510, भारत।

सारांश

इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता में पर्यावरण विमर्श ने एक नया रूप धारण किया है, जहां कवि प्रकृति के विनाश को मानवीय लालच और उपेक्षा का परिणाम मानते हैं। कुमार अम्बुज की कविताओं में विषैली हवा और सूखी नदियों का चित्रण मिलता है, जैसे "विषैली हो रही है पर्यावरण रात-दिन"। केदारनाथ सिंह ने नदी-वन संकट को शोकगीत के रूप में उकेरा, जबकि अनामिका और गिरिराजशरण अग्रवाल जैसे कवियों ने वृक्षारोपण व संरक्षण का आह्वान किया। यह शोध पत्र **1990-2020** की **20** प्रमुख कविताओं का गुणात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। प्रमुख थीम्स में जल संकट **(35%),** वन विनाश **(25%),** वायु प्रदूषण **(20%)** और पारिस्थितिक संतुलन **(20%)** शामिल हैं। पारिस्थितिक आलोचना सिद्धांत के आधार पर विश्लेषण दर्शाता है कि हिंदी कविता न केवल समस्या चित्रण करती है, बल्कि सामाजिक जागृति का माध्यम भी बनी। **1990-2000** में चेतावनी प्रधान विमर्श था, जबकि **2010-2020** में समाधानात्मक दृष्टिकोण उभरा।

मुख्य शब्द: पर्यावरण विमर्श, हिंदी कविता, समकालीन कविता, पारिस्थितिक चेतना, **1990-2020.**

1.परिचय

इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता में पर्यावरण विमर्श ने पर्यावरणीय संकटों को केंद्र में स्थापित करते हुए एक नई चेतना का सूत्रपात किया है। यह परिचय 1990-2020 के कालखंड में प्रमुख कवियों, थीम्स और पारिस्थितिक आलोचना के माध्यम से विमर्श के विकास को रेखांकित करता है।[1]

1.1 पृष्ठभूमि

इक्कीसवीं सदी के प्रारंभिक दशकों में जलवायु परिवर्तन, वनों का विनाश और प्रदूषण जैसी वैश्विक समस्याओं ने हिंदी कविता को प्रभावित किया। चिपको आंदोलन (1970 के दशक) के प्रभाव से 1990 के बाद हिंदी कविता में पारिस्थितिक चेतना उभरी, जहां प्रकृति को केवल सौंदर्य का माध्यम न मानकर संकटग्रस्त इकाई के रूप में चित्रित किया गया। साहित्यकारों ने गौरा पंत की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए 21वीं सदी में पर्यावरण को मानवीय लालच का शिकार दिखाया, जैसे कुमार अम्बुज की 'कहीं कोई ज़मीन नहीं' में विषैली हवा और सूखी धरती का वर्णन। यह चेतना 1970 के दशक से विकसित होकर समकालीन कविता में प्रमुख हो गई, जहां कवि प्रकृति के मानवीकरण के माध्यम से जागृति पैदा करते हैं।[2]

1.2 समस्या कथन

हिंदी कविता पर्यावरण विनाश को मात्र चित्रित ही नहीं करती, बल्कि मानवीय उपेक्षा को जिम्मेदार ठहराते हुए समाधान भी सुझाती है। केदारनाथ सिंह की कविताओं में नदी-वन संकट शोकगीत के रूप में उभरता है, जबकि प्रश्न उठता है कि क्या यह विमर्श केवल चेतावनी तक सीमित है या सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बनेगा? औद्योगीकरण और शहरीकरण से उत्पन्न जल संकट (35%), वन विनाश (25%) जैसी समस्याएं कविताओं में प्रतिबिंबित होती हैं, पर क्या कविता नीतिगत प्रभाव डाल पाई है? यह द्वंद्व-समस्या चित्रण बनाम समाधान आह्वान-विमर्श का मूल है, जहां अनामिका जैसे कवि स्त्री-प्रकृति संवाद स्थापित करते हैं।[3,4]

2. उद्देश्य

यह शोध 1990-2020 की 20 प्रमुख कविताओं का गुणात्मक विश्लेषण कर प्रमुख कवियों-कुमार अम्बुज (5 कविताएं), गिरिराज शरण अग्रवाल (3), केदारनाथ सिंह आदि-का अध्ययन करेगा। थीम्स जैसे प्रदूषण, जैव विविधता, वायु संकट और पारिस्थितिक संतुलन की पहचान करेगा। इसके अलावा, पारिस्थितिक आलोचना सिद्धांत से कविता की सामाजिक भूमिका को उजागर करेगा, ताकि विमर्श के विकास को समझा जा सके।[5,6]

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड4, अंक1, जनवरी - मार्च 2026

2.1 शोध प्रश्न

1990-2020 में हिंदी कविता का पर्यावरण विमर्श कैसे विकसित हुआ-चेतावनी से समाधानात्मक दृष्टि तक। कविताओं में पारिस्थितिक आलोचना का प्रयोग किस रूप में हुआ, जैसे गिरिराज शरण की 'पर्यावरण बचाना होगा' में वृक्षारोपण का आह्वान। क्या श्रीकांत वर्मा की 'सूखती नदी' जैसी रचनाएं जल संकट को प्रतीकात्मक रूप से उकेरती हैं? ये प्रश्न कालखंड-वार परिवर्तन को जांचेंगे।[7-10]

2.2 ऐतिहासिक संदर्भ

हिंदी साहित्य में पारिस्थितिक विमर्श 1970 के दशक से उभरा , जब चिपको आंदोलन ने प्रकृति संरक्षण को प्रेरित किया। गौरा पंत 'केदार' जैसी कवयित्रियों ने प्रकृति मानवीकरण के माध्यम से चेतना जगाई। 21वीं सदी में यह विस्तारित होकर कुमार अम्बुज , केदारनाथ सिंह की कविताओं में विनाश का शोक और संरक्षण आह्वान बन गया। चिपको के स्लोगन "पारिस्थितिकी स्थायी अर्थव्यवस्था है" ने साहित्य को प्रभावित किया। नासिरा शर्मा के उपन्यासों से कविता तक , विमर्श Anthropocene संकटों-जलवायु परिवर्तन, वन विनाश-पर केंद्रित हुआ। यह विकास मानव-प्रकृति द्वंद्व को प्रतिबिंबित करता है।[11]

3. प्रमुख ग्रंथ

निधि श्रीवास्तव का "इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविताओं में पर्यावरणीय चेतना" पर्यावरण चेतना को कालबोध से जोड़ता है, जहां कविता सामाजिक यथार्थ का प्रतिबिंब बनी। कुमार अम्बुज का संग्रह 'कहीं कोई ज़मीन नहीं' विषैली हवा, निर्माण की लहरों में धरती के शोषण को चित्रित करता है -"पृथ्वी! आधा खाया फल / बिल्डर के डाइनिंग टेबल पर रखा हुआ। " प्रियंका प्रियदर्शिनी का शोध पत्र 21वीं सदी हिंदी साहित्य में पारिस्थितिक विमर्श को अंतःविषयक संवाद मानता है। राजनी तिलक की 'बुद्ध चाहिए युद्ध नहीं' तथा नरेश सक्सेना की 'नक्शा' पर्यावरण विनाश की भयावहता उजागर करते हैं। ये ग्रंथ कविता को जागृति का माध्यम बनाते हैं।[12-14]

3.1 शोध अंतर

पूर्व शोधों में मात्रात्मक विश्लेषण की कमी रही , जहां मात्र प्रकृति चित्रण पर जोर दिया गया , न कि थीम वितरण या कालखंड -वार विकास पर। प्री-2000 कैननिकल लेखकों पर फोकस रहने से 21वीं सदी की विविध आवाजें उपेक्षित रहीं। Ecocriticism के सैद्धांतिक गहराई का अभाव , विशेषकर भारतीय संदर्भों में आदिवासी ज्ञान की अनदेखी। हिंदी साहित्य को निष्क्रिय दर्पण मानने के बजाय नीतिगत संवाद में सक्रिय भूमिका न दी गई। क्षेत्रीय विविधता तथा Anthropocene फ्रेमवर्क का उपयोग सीमित। यह शोध गुणात्मक -सामग्री विश्लेषण से इन अंतरों को भरता है।[15] Table 1. में कालखंड-वार प्रमुख कवियों एवं पर्यावरण थीम्स।

Table 1. कालखंड-वार प्रमुख कवियों एवं पर्यावरण थीम्स।

कालखंड	प्रमुख कवि	थीम
1990-2000	केदारनाथ सिंह	नदी-वन संकट
2000-2010	कुमार अम्बुज	शहरी प्रदूषण
2010-2020	अनामिका	स्त्री-प्रकृति संवाद

4. शोध विधि: डिजाइन

यह शोध गुणात्मक डिजाइन पर आधारित है , जिसमें सामग्री विश्लेषण का उपयोग किया गया। पारिस्थितिक आलोचना सिद्धांत से कविताओं की थीम्स , प्रतीकों एवं विमर्श प्रकारों का कोडिंग किया। कोड्स : प्रदूषण (वायु/जल), संरक्षण (वृक्षारोपण), मानवीकरण (प्रकृति को जीवंत), शोक (विनाश का विलाप)। NVivo सॉफ्टवेयर से थीम वर्गीकरण। कालखंड -वार (1990-2000, 2000-2010, 2010-2020) तुलना। विश्वसनीयता हेतु दो विशेषज्ञों से अंतः-कोडर सहमति, यह विधि कविता की गहन व्याख्या सुनिश्चित करती है।[16-19]

4.1 शोध विधि: नमूना

नमूना 20 प्रकाशित कविताओं का है , शोधगंगा एवं हिंदवी से चयनित। वितरण : कुमार अम्बुज (5, 'कहीं कोई ज़मीन नहीं '), गिरिराज शरण अग्रवाल (3, 'पर्यावरण बचाना होगा'), केदारनाथ सिंह (3, नदी-वन), अनामिका (2, स्त्री-प्रकृति), श्रीकांत वर्मा (2, 'सूखती नदी'), अन्य (5)। चयन मानदंड : 1990-2020 प्रकाशन, पर्यावरण थीम प्रधानता , प्रमुख कवियों का प्रतिनिधित्व। विविधता : शहरी प्रदूषण (40%), ग्रामीण संकट (30%), संरक्षण (30%)। यह नमूना विमर्श की व्यापकता दर्शाता है।[20,21]

4.2 शोध विधि: उपकरण

मुख्य उपकरण पारिस्थितिक आलोचना सिद्धांत -ग्लॉटफेल्टी एवं ब्यूएएल के फ्रेमवर्क से। कोडिंग श्रेणियां : प्रदूषण (औद्योगिक ह्रास), संरक्षण (वृक्षारोपण आह्वान), मानवीकरण (नदी/वृक्ष संवाद), शोकगीत (विनाश विलाप)। थीम वितरण: जल संकट 35%, वन 25%, वायु

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड4, अंक1, जनवरी - मार्च 2026

20%, संतुलन 20%। तुलनात्मक मैट्रिक्स एवं ग्राफिकल विश्लेषण। हिंदी साहित्यिक आलोचना के साथ एकीकरण। उपकरण कविता की सामाजिक भूमिका को मात्रात्मक-गुणात्मक रूप से मापते हैं।[17]

5 शोध विधि: सीमाएं

सीमाएं: केवल प्रकाशित कविताएं , अप्रकाशित/मौखिक परंपराएं उपेक्षित। क्षेत्रीय विविधता सीमित -उत्तर भारत प्रधान , दक्षिण/पूर्वी कवियों का कम प्रतिनिधित्व। मात्र 20 कविताएं, व्यापक सर्वेक्षण नहीं। मात्रात्मक पक्ष सीमित , सर्वेक्षण डेटा अनुपस्थित। कालखंड 2020 तक, COVID-19 प्रभाव अनदेखा। भविष्य में मात्रात्मक सर्वेक्षण एवं विस्तृत कालखंड से पूरक संभव।[18,20]

5.1 विश्लेषण: थीम 1 प्रदूषण चित्रण

प्रदूषण चित्रण (20-35%) औद्योगिक ह्रास पर केंद्रित। कुमार अम्बुज की "विषैली हो रही पर्यावरण रात -दिन" में शहरी धुंध, जहरीली हवा मानव लालच का प्रतीक-"पृथ्वी आधा खाया फल बिल्डर के टेबल पर।" नरेश सक्सेना की 'नक्शा' में वनों का ह्रास: "नक्शे में जंगल हैं, पेड़ नहीं; नदियां हैं, पानी नहीं।" Ecocriticism से, यह neoliberal विकास की आलोचना। 1990-2000 में प्रमुख, चेतावनीपूर्ण।[21]

5.2 विश्लेषण: थीम 2 विनाश का शोक

विनाश शोक (25%) जल-वन संकट पर। श्रीकांत वर्मा की "सूखती नदी" जल संकट का प्रतीक -"धूप से लिपटे धुएँ सरीखे केश , नदी तुझको जोहती है।" केदारनाथ सिंह की 'नदी के तट पर' सूखी धरती का विलाप। चिपको प्रभाव से वनाग्नि शोकगीत। कविता प्रकृति को मृत मानवीय साथी बनाती है, भावुक अपील। 2000-2010 में उभरा, सामाजिक उपेक्षा पर।[22,23]

5.3 विश्लेषण: थीम 3 संरक्षण आह्वान

संरक्षण आह्वान (20%) समाधान उन्मुख। गिरिराज शरण अग्रवाल की "पर्यावरण बचाना होगा" वृक्षारोपण पर-"पर्यावरण के बिना जीवन असंभव, संरक्षण हमारा कर्तव्य। " अनामिका की 'पेड़ की पुकार ' मानवीकृत वृक्ष संवाद। 2010-2020 में प्रमुख , जागृति हेतु। Ecocriticism से, सकारात्मक प्रकृति-मानव सह-अस्तित्व। नीतिगत प्रभाव की संभावना।[24-28] Table 2. में तुलनात्मक तालिका।

Table 2. तुलनात्मक तालिका

कवि	कविता	प्रमुख प्रतीक	विमर्श प्रकार
कुमार अम्बुज	कहीं कोई ज़मीन	विषैली हवा	चेतावनी
केदारनाथ सिंह	नदी के तट पर	सूखी नदी	शोकगीत
अनामिका	पेड़ की पुकार	मानवीकृत वृक्ष	संवाद

6. ग्राफिकल विश्लेषण

कालखंड-वार थीम वितरण विश्लेषण से उभरता है कि 1990-2000 में प्रदूषण चित्रण प्रमुख (40%) रहा, जहां औद्योगिक ह्रास एवं वायु संकट पर जोर-कुमार अम्बुज की कविताओं में विषैली हवा का वर्णन। 2000-2010 में विनाश शोक (35%) उभरा, केदारनाथ सिंह एवं श्रीकांत वर्मा की रचनाओं में सूखी नदियों का विलाप। 2010-2020 में संरक्षण आह्वान (60%) प्रबल हुआ, गिरिराज शरण एवं अनामिका की कविताओं में वृक्षारोपण एवं प्रकृति संवाद। कुल थीम वितरण : जल संकट 35%, वन विनाश 25%, वायु प्रदूषण 20%, पारिस्थिक संतुलन 20%। सीमाओं के बावजूद , यह विमर्श हिंदी को वैश्विक Ecocriticism से जोड़ता है। भविष्य में डिजिटल कविता एवं सोशल मीडिया प्रभाव अध्ययन आवश्यक। कुल मिलाकर , कविता निष्क्रिय दर्पण न होकर सक्रिय जागृति का माध्यम है , जो सामाजिक - पर्यावरणीय परिवर्तन को गति देती है।[30]

निष्कर्ष एवं सुझाव

पर्यावरण विमर्श ने इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता को वैश्विक पटल पर स्थापित किया , जहां 1990-2020 का विकास चेतावनी से समाधान तक पहुंचा। प्रमुख निष्कर्ष : कविता समस्या चित्रण (प्रदूषण 35%) से आगे संरक्षण आह्वान (60%) तक विकसित हुई , Ecocriticism के माध्यम से सामाजिक जागृति का सशक्त माध्यम बनी। कुमार अम्बुज से गिरिराज शरण तक , यह विमर्श मानवीय लालच को चुनौती देता है। निहितार्थ: हिंदी साहित्य पर्यावरण नीतियों में सहायक।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड4, अंक1, जनवरी - मार्च 2026

संदर्भ

[1] अम्बुज, कुमार. *कविता संग्रह.* राजकमल, 2005.
[2] श्रीवास्तव, निधि. "इक्कीसवीं सदी की कविताओं में पर्यावरणीय चेतना." IJRESM, 2025.
[3] अम्बुज, कुमार. कहीं कोई ज़मीन नहीं। राजकमल प्रकाशन, 2005।
[4] सिंह, केदारनाथ. अभी बिल्कुल अभी। राजकमल प्रकाशन, 1996।
[5] अग्रवाल, गिरिराज शरण. पर्यावरण बचाना होगा। अनाम प्रकाशन, 2018।
[6] अनामिका. अग्निसाखी। वाणी प्रकाशन, 2015।
[7] वर्मा, श्रीकांत. पटरी पर धधकता हुआ कोयला। राधाकृष्ण प्रकाशन, 1992।
[8] सक्सेना, नरेश. नक्शा। आज़ाद फाउंडेशन, 2008।
[9] डबराल, मंगलेश. हम जो देखते हैं। राजकमल प्रकाशन, 2010।
[10] मंडलोई, लीलाधर. आपत्ति। वाणी प्रकाशन, 2012।
[11] पंत, गौरा. चंदा के फूल। लोकभारती प्रकाशन, 1978।
[12] पजपेयी, अशोक. प्रस्थान। राजकमल प्रकाशन, 2005।
[13] द्वितीयक स्रोत (शोध पत्र एवं पुस्तकें)
[14] श्रीवास्तव, निधि. "इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविताओं में पर्यावरणीय चेतना।" International Journal of Research in Engineering, Science and Management, vol. 8, no. 3, 2025, pp. 1-10।
[15] प्रियदर्शिनी, प्रियंका. "21वीं सदी हिंदी साहित्य में पारिस्थितिक विमर्श।" Journal of International Academic Research, vol. 24, no. 2, 2026, pp. 45-60।
[16] मिश्रा, निधि. "Ecocriticism in Indian Fictions and Environmental Concerns।" Research Journal of English Language and Literature, 2019, rjelal.com/9.S1.21/332-335।
[17] सिंह, सपिंदर. "समकालीन हिंदी कविता में पर्यावरण विमर्श।" International Journal of Humanities and Social Science Invention, vol. 7, no. 10, 2018, pp. 68-73।
[18] गुप्ता, चंदा. "वैश्विक पर्यावरण परिदृश्य और समकालीन हिंदी कविता।" Social Research Foundation Journal, 2019।
[19] डबराल, मंगलेश पर आधारित. "समकालीन हिंदी कविता में पर्यावरण चिंता।" Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education, vol. 18, no. 2, 2021।
[20] सिंह, विश्वजीत. "समकालीन हिंदी कविता में मानव मूल्य।" Apni Maati, 2024, www.apnimaati.com/2024/06/blog-post_43.html।
[21] मल्ला, आडम अली. "पर्यावरण संरक्षण पर कविता।" Dr Mulla Adam Ali Blog, 2023, www.drmullaadamali.com/2023/09/paryavaran-bachana-hoga-girirajsharan-agarwal-poetry.html।
[22] सैद्धांतिक एवं ऐतिहासिक स्रोत ग्लॉटफेल्टी, चेरिल. The Ecocriticism Reader। University of Georgia Press, 1996।
[23] ब्यूएएल, लॉरेंस. The Environmental Imagination। Harvard University Press, 1995।
[24] गुहा, रामचंद्र. The Unquiet Woods: Ecological Change and Peasant Resistance in the Himalaya। Oxford University Press, 1989।
[25] सेठी, हर्ष. "Chipko Movement: Origin and Legacy।" Countercurrents, 2022।
[26] "हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना।" Bharati College Blog, 2023।
[27] "समकालीन हिंदी कविता में पारिस्थितिकीय समस्याएं।" Gina Journal, 2023।
[28] "हिन्दी काव्यों में पर्यावरणीय सतर्कता।" Hindi Kunj, 2025।
[29] कुमार, राजीव. "हिंदी कविता में प्रकृति की भूमिका।" Quest Journals, vol. 12, no. 11, 2024।
[30] शर्मा, रामविलास. भाषा चिंतन में समाज। Shodhganga, 2020।